विज्ञप्ति

हे प्रभो! यह तेरापंथ

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) वर्ष 25 : अंक 51 : नई दिल्ली : 13-19 मार्च 2020

अहिंसा यात्रा प्रणेता, शांतिदूत, महातपस्वी, जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी पश्चिम महाराष्ट्र में सानन्द सुखसातापूर्वक विहरण कर रहे हैं। गर्मी क्रमशः बढती जा रही है, फिर भी रात्रि में और प्रातःकाल वातावरण में हल्की ठंड व्याप्त रहती है। स्थानीय जैन समाज एवं जैनेतर समाज में भी आचार्यप्रवर के प्रति भक्ति का भाव अनायास देखने को मिल रहा है। सोलापुर के श्रद्धालुओं की प्रार्थना पर पूज्यप्रवर ने निर्धारित कार्यक्रम से एक दिन पूर्व सोलापुर में पधारना एवं वहां दो दिवसीय प्रवास करना स्वीकार किया है। पूज्यप्रवर अप्रेल के प्रथम सप्ताह में लातुर और अम्बाजोगई, द्वितीय सप्ताह में बीड़, अंतिम सप्ताह में औरंगाबाद तथा मई के प्रथम सप्ताह में जालना में पधारेंगे, ऐसा पूर्व निर्णीत है। आचार्यप्रवर की पावन सन्निधि में अम्बाजोगई में महावीर जयंती, औरंगाबाद में अक्षय तृतीया तथा जालना में पूज्यप्रवर के जन्मोत्सव एवं पट्टोत्सव के कार्यक्रम समायोज्य हैं। पूज्यप्रवर जून के दूसरे सप्ताह में हैदराबाद शहर में पधारेंगे, ऐसी संभावना है। चातुर्मासिक प्रवेश से पूर्व वहां १७-१९ जून को आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी वर्ष समापन समारोह आयोज्य है।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर महाराष्ट्र में

जैनशासन के विभिन्न स्थानों में श्रमण संस्कृति उद्गाता आचार्यप्रवर

१ मार्च। परमपूज्य आचार्यप्रवर के इचलकरंजी प्रवास का द्वितीय दिन। आज विहार नहीं था, किन्तु लोगों की भावना पर आचार्यप्रवर की अनुग्रहवृष्टि के कारण प्रातराश से पूर्व तक पूज्यप्रवर की करीब तीन कि. मी. की यात्रा हो गई। आचार्यप्रवर प्रवास स्थल से प्रस्थान कर साध्वी सलिलयशाजी के संसारपक्षीय परिजनों के प्रवास परिसर में पधारे और वहां कुछ क्षण आसीन होकर उन्हें मंगलपाठ सुनाया। यह सौभाग्य प्राप्त कर भंसाली परिवार धन्यता की अनुभूति कर रहा था। आचार्यप्रवर मुनि मधुरकुमारजी, मुनि अक्षयकुमारजी, साध्वी मृदृयशाजी और साध्वी प्रफुल्लप्रभाजी के संसारपक्षीय ज्ञातिजनों के निवास स्थान के निकट पधारे। मार्गस्थ 'काई' के कारण आचार्यप्रवर घर में तो नहीं पधार पाए, किन्तु घर के बाहर कुछ क्षण आसीन होकर बैदमूथा परिवार को उपासना का अवसर प्रदान किया। आचार्यप्रवर का यह अनुग्रह प्राप्त कर बैदमूथा परिवार प्रफुल्लित था।

पूज्यप्रवर श्री वासूपूज्य जैन सेवा संस्था के कार्यकर्ताओं के निवेदन को स्वीकार कर श्रीवासुपुज्य जैन दवाखाना में पधारे। संबंधित कार्यकर्ताओं ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपनी अभिव्यक्ति देते हुए संस्था के विषय में अवगति प्रस्तुत की। पूज्यप्रवर ने उपस्थित लोगों को पावन सम्बोध प्रदान किया। आचार्यप्रवर श्री राजस्थानी जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ की प्रार्थना पर उससे संबंधित भवन में पधारे और वहां कुछ क्षण विराजमान हुए। मूर्तिपूजक समाज की ओर से पूज्यप्रवर के स्वागत में अभिव्यक्ति दी गई। आचार्यप्रवर ने उपस्थित जनता को उत्प्रेरित किया। पूज्यप्रवर का श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ के अनुरोध पर स्थानीय स्थानक में भी पदार्पण हुआ। स्थानकवासी समाज के लोगों ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। आचार्यप्रवर ने उन्हें पावन पार्थय प्रदान किया। मार्ग में अनेकानेक लोगों को अपने-अपने घरों/व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के निकट आचार्यप्रवर के दर्शन और श्रीमुख से मंगलपाठ श्रवण का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस प्रकार करीब तीन कि.मी. की यात्रा परिसम्पन्न कर आचार्यप्रवर पुनः प्रवास स्थल में पधारे।

पूज्यप्रवर मुख्य प्रवचन कार्यक्रम हेतु प्रवचन पंडाल की ओर पधारते हुए किसी श्रद्धालु परिवार के घर में पधारे। उसी समय दिगम्बर आम्नाय के मुनिश्री प्रज्ञासागरजी भी उस घर के आगे से पधार रहे थे। उन्हें जब उस घर में आचार्यप्रवर के अवस्थित होने की जानकारी मिली तो वे भी उस घर में पहुंचे और आचार्यप्रवर से मिले। परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण और उनके बीच संक्षिप्त वार्तालाप हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परमपूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आत्मा और शरीर--ये दो तत्त्व हैं। इन दो तत्त्वों के द्वारा जीवन अस्तित्व में आता है। कोरा शरीर और कोरी आत्मा जीवन नहीं होते। मृत्यु के बाद शरीर रहता है, आत्मा उसमें से निकल चुकी होती है, वहां जीवन नहीं होता। मुक्त आत्मा कोरी आत्मा होती है, शरीरविहीन होती है, वहां भी जीवन नहीं होता। जीवन वहीं हो सकता है, जहां आत्मा और शरीर दोनों परस्पर मिले-जुले होते हैं। शरीर और आत्मा का अलग-अलग होना मृत्यु होती है और हमेशा के लिए आत्मा का शरीर से मुक्त हो जाना मोक्ष होता है।

स्थानीय विधायक श्री प्रकाशराव आवाड़े ने कहा--'तेरापंथ धर्मसंघ के सर्वेसर्वा, सर्वश्रेष्ठ संत परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण इचलकरंजी शहर में पधारे हैं। मैं आचार्यश्री के चरणों में विनम्रतापूर्वक वन्दन करता हूं और यहां पदार्पण पर विनयपूर्वक स्वागत करता हूं। आचार्यश्री के आगमन से शहर में उत्सव का माहौल है। सर्वधर्म, सर्वजाति के लोग इस उत्सव में संभागी बने हुए हैं। आचार्यश्री अपनी अहिंसा यात्रा में देश-विदेश में भ्रमण कर मनुष्य को मनुष्यता का संदेश दे रहे हैं। आप विश्व शांति के लिए बहुत बड़ा कार्य कर रहे हैं। आचार्यश्री तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञजी और उनके बाद आचार्यश्री महाश्रमणजी के नेतृत्व में तेरापंथ धर्मसंघ के सभी साधु-साध्वियां सैनिक की भांति राष्ट्र और समाज के उत्थान के लिए कठोर परिश्रम कर रहे हैं। मैं बहुत भाग्यशाली हूं कि मुझे आचार्यश्री महाश्रमणजी के दर्शन करने और आपके प्रवचन सुनने का सुअवसर मिला। आपके पदस्पर्श से इचलकरंजी शहर पावन हो गया। आपके आशीर्वाद से यह शहर ही नहीं, राष्ट्र भी निश्चित रूप से उन्नति करेगा।'

सांसद श्री धैर्यशील माने ने कहा--'यह हमारा अहोभाग्य है कि आचार्यश्री महाश्रमणजी वस्त्रनगरी इचलकरंजी में पधारे हैं। इस पावन अवसर पर हम सभी भक्तजन नतशीश होकर आपसे आशीर्वाद की कामना करते हैं। आचार्यश्री ने अब तक सैंतालीस हजार से ज्यादा किलोमीटर की पदयात्रा कर ली है। शायद ही कोई ऐसे दूसरे धर्मगुरु होंगे, जो अहिंसा के संदेश के साथ देश-विदेश में हजारों किलोमीटर की पदयात्रा कर रहे हैं। इचलकरंजी शहर का सचमुच सौभाग्य है कि इतनी बड़ी हस्ती इस शहर में विराजमान है। आचार्यश्री जिला परिषद के विद्यालयों में प्रवास करते हैं। जहां सरकार के प्रतिनिधि भी नहीं जाते, वहां जाकर आचार्यश्री बच्चों को जीने की राह दिखाते हैं और उन्हें अपना मंगल आशीर्वाद देते हैं। मैं भाग्यशाली हूं कि मुझे भी आपके दर्शन और आशीर्वाद पाने का सौभाग्य मिला। मैं सभी से आह्वान करना चाहूंगा कि आप सभी गुरुवर महाश्रमणजी के साथ कुछ पैदल अवश्य चलें। मैं स्वयं गुरुवर के साथ पैदल चलना चाहता हूं। आचार्यश्री का आशीर्वाद हमारे इस क्षेत्र पर बना रहे।' कार्यक्रम में पूर्व सांसद श्री कल्लापाण्णा आवाड़े भी उपस्थित थे। उन्हें भी पूज्यप्रवर के दर्शन और प्रवचन श्रवण का सुअवसर मिला।

कार्यक्रम में साध्वी अमितरेखाजी ने अपनी विचाराभिव्यक्ति दी। स्थानीय तेरापंथी सभा के मंत्री श्री पुष्पराज सकलेचा, तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती सीमादेवी डागा, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष श्री प्रवीण भंसाली, श्रीमती जयश्री जोगड़, श्री संजय बैदमूथा, श्री दिनेश छोजड़, श्रीमती भारती संकलेचा, श्री ओमप्रकाश बैदमूथा, श्री जसराज छाजेड़, श्री गौतम छाजेड़ और श्री जवाहरलाल भंसाली ने अपनी अभिव्यक्ति के द्वारा अपने आराध्य की अभ्यर्थना की। तेरापंथ समाज-इचलकरंजी द्वारा पूज्यप्रवर की अभ्यर्थना में गीत का संगान किया गया। ज्ञानशाला परिवार ने पूज्यचरणों में संकल्पों का उपहार अर्पित किया।

इचलकरंजी के श्री केवलचंद ढेलढिया और श्रीमती संतोष आंचलिया ने ३० दिन तथा श्रीमती मीना

भंसाली ने २७ दिन की तपस्या का प्रत्याख्यान कर पूज्यप्रवर का तपोमय अभिनन्दन किया।

आज के कार्यक्रम में जैन समाज की सामूहिक सामायिक का क्रम भी रखा गया था, जिसमें करीब २१०० लोगों ने सामायिक की।

आज स्थानीय तेरांपथी सभा द्वारा महाराष्ट्र स्तरीय (मुम्बई को छोड़कर) ज्ञानशाला शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों के ज्ञानार्थी, प्रशिक्षक-प्रशिक्षिकाएं, व्यवस्थापक संभागी बने। संभागियों को पूज्यप्रवर का पावन पाथेय प्राप्त हुआ। साध्वी शरदयशाजी, साध्वी समताप्रभाजी और साध्वी सिद्धार्थप्रभाजी ने संभागियों को प्रशिक्षण दिया।

आज मध्याह्न में स्थानीय तेरापंथी सभा के द्वारा 'आध्यात्मिक उन्नयन' कार्यक्रम समायोजित हुआ, जिसमें करीब १२५ व्यक्ति संभागी बने। संभागीजनों को आचार्यप्रवर से पावन संबोध प्राप्त हुआ। मुनि आलोककुमारजी ने भी संभागियों को प्रशिक्षण दिया।

आज प्रातः स्थानीय तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में पांच कि.मी. की नशामुक्ति मैराथन दौड़ का आयोजन किया गया, जिसमें जैन एवं जैनेतर समाज के ६५० व्यक्ति संभागी बने। दौड़ के प्रारंभ से पूर्व संभागियों ने प्रवास स्थल के समीप उपस्थित होकर पूज्यप्रवर से मंगलपाठ सुना।

सच्चाई और अच्छाई किसी भी ग्रन्थ, पन्थ और सन्त से मिले, स्वीकार कर लो

२ मार्च। परमाराध्य आचार्यप्रवर के त्रिदिवसीय इचलकरंजी प्रवास का अंतिम दिन। आज भी आचार्यप्रवर ने श्रद्धालुओं पर अनुग्रहवृष्टि बरसाते हुए विहार न होते हुए भी करीब तीन कि.मी. की यात्रा कर ली। आचार्यप्रवर इस दौरान श्री जैन श्वेताम्बर मणिधारी जिनचंद्रसूरी दादावाड़ी संघ के निवेदन को स्वीकार कर मणिधारी भवन में भी पधारे और वहां कुछ क्षण विराजमान होकर उपस्थित जनता को पावन उद्बोधन प्रदान किया। दादावाड़ी संघ की ओर से आचार्यप्रवर का सादर स्वागत किया गया। पूज्यप्रवर का तीन तेरापंथी श्रद्धालुओं के मासखमण तप के संदर्भ में उनके घर में पधारना हुआ। तपस्वियों ने पूज्यप्रवर को भोज्य पदार्थ बहराकर अहोभाव की अनुभूति की। अपने आराध्य को अपने प्रांगण में पाकर तीनों परिवार अतिशय आह्लादित थे। आज भी मार्ग में कई श्रद्धालु अपने-अपने घरों आदि के आसपास पूज्यप्रवर के दर्शन और मंगलश्रवण से लाभान्वित हुए। इस प्रकार करीब तीन कि.मी. का परिभ्रमण कर आचार्यप्रवर पुनः प्रवास स्थल में पधारे।

आज का मुख्य प्रवचन कार्यक्रम 'जैनं जयति शासनम्' के रूप में आयोजित हुआ। परमाराध्य आचार्यप्रवर के प्रवचन पंडाल में पदार्पण के कुछ ही समय पश्चात् दिगम्बर मुनि प्रज्ञासागरजी भी प्रवचन पंडाल में पधारे। आचार्यप्रवर ने मंच से नीचे पधारकर उनकी अगवानी की। तदुपरांत आचार्यप्रवर पुनः मंचासीन हुए। मुनि प्रज्ञासागरजी पूज्यप्रवर के समीप स्थित हुए।

कार्यक्रम में स्थानीय जैन समाज द्वारा गीत का संगान किया गया। श्री राजेश सुराणा, पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन समाज की ओर से श्री ओमप्रकाश पाटनी और तेरापंथ सभा अध्यक्ष श्री दीपचंद तलेसरा ने हृदयोद्गार व्यक्त किए।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'क्षमा महान धर्म है। उत्तम स्तर की क्षमा जीवन में आ जाती है तो आदमी स्वयं उत्तम बन जाता है। क्षमा का अर्थ है सहन करना। जीवन में अनुकूल स्थितियां भी आ सकती हैं और प्रतिकूल स्थितियां भी आ सकती हैं। अनुकूलता और प्रतिकूलता दोनों में समभाव रहना चाहिए। अनुकूलता में ज्यादा हर्ष न हो और प्रतिकूलता में दुःख न हो, ऐसा अभ्यास करना चाहिए। जैन शासन में समता को बहुत महत्त्व दिया गया है। समता को धर्म कहा गया है। जीवन की द्वंद्वात्मक स्थितियों में समत्व में रहने का प्रयास करना चाहिए। जहां समता है, क्षमा है, वहां जय अपने आप हो जाती है, आत्मा की विजय होती है और जैन शासन में रहने वाले व्यक्ति ऐसी साधना करते हैं तो जैन शासन की भी जय हो जाती है।

हम लोग जैन शासन में साधना कर रहे हैं। पिछले कई दशकों से मैं देख रहा हूं कि जैन शासन के आचार्य, साधु आदि-आदि परस्पर मिलते हैं। परस्पर वार्तालाप होता है, सहकार्यक्रम भी होता है। जैन शासन में दो धाराएं हैं दिगम्बर और श्वेताम्बर। संप्रदाय तो बाहरी पहचान के साधन हैं कि अचेल हैं तो दिगम्बर और श्वेत कपड़े हैं तो श्वेताम्बर। दिगम्बर और श्वेताम्बर बाहरी पहचान हो सकती है, हमारी भीतरी पहचान तो यह हो कि सब शुद्ध चेतना के साधक हैं। मोक्ष प्राप्ति के लिए कषाय मुक्ति आवश्यक है। आत्मा कषायों से, कर्मों से सर्वथा मुक्त हो जाती है तो मुक्ति मिल जाती है।

दिगम्बर और श्वेताम्बर जैन शासन की दो धाराएं हैं। दिगम्बर साहित्य, आचार्यश्री कुन्दकुन्द के ग्रन्थों में भी कितना ज्ञान है। आचार्यश्री उमास्वाति का तत्त्वार्थ सूत्र दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनों परम्पराओं में लगभग समान रूप से सम्मत है, ऐसा मुझे प्रतीत हुआ। तत्त्वार्थ सूत्र की व्याख्या तत्त्वार्थवार्तिक, तत्त्वार्थ पर स्वयं उमास्वाति का स्वोपज्ञ भाष्य और उस पर श्वेताम्बर परंपरा के सिद्धसेनगणी की टीका में कितना ज्ञान भरा है। इसी प्रकार श्वेताम्बर परंपरा के ग्रन्थों में कितना-कितना ज्ञान सन्निहित है।

पूर्वाग्रह सच्चाई की साधना में बाधक है। जहां अनाग्रह होता है, वहां सत्य प्राप्त हो सकता है। सच्चाई और अच्छाई किसी भी ग्रंथ में मिले, किसी भी पंथ में मिले और किसी भी संत के पास मिले, उनका सम्मान होना चाहिए। सच्चाई और अच्छाई सदा सम्मान की पात्र हैं।

अपनी-अपनी परम्परा हो सकती है, विचारधारा भी अपनी-अपनी हो सकती है, आचार में कहीं-कहीं अन्तर हो सकता है। किन्तु व्यवहार में मैत्री भाव रहे, अद्वेषभाव रहे और अनाग्रह रहे। अनेकांत अनाग्रह की बात बताता है। आग्रह भाव रहेगा तो नया ज्ञान कैसे प्राप्त हो सकता है। आदमी व्यर्थ पूर्वाग्रह में न उलझे, नए ज्ञान को प्राप्त करने, समझने का भी प्रयास करे, यह काम्य है।'

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'परमपूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी और दिगम्बर परम्परा के आचार्यश्री विद्यानन्दजी का परस्पर निकटता का संबंध था, ऐसा प्रतीत हुआ। दोनों ही ज्ञानी पुरूष के रूप में प्रतीत हुए। हम दिल्ली में अध्यात्म साधना केन्द्र महरोली में थे, तब आचार्यश्री विद्यानन्दजी वहां पधारे थे और रात में भी वहां विराजे थे। मैं भी कुछ वर्षों पूर्व कुन्दकुन्द भारती में गया था। इस प्रकार आचार्यश्री विद्यानन्दजी का हमारे साथ निकटता का संबंध रहा। दिगम्बर परम्परा के कई आचार्यों, मुनिजी से हमारा इस यात्रा के दौरान मिलना होता रहता है। इसी प्रकार श्वेताम्बर परम्परा के आचार्यों, साधु-साध्वियों से भी मिलना हो जाता है। जब दिल्ली में भगवान महावीर की निर्वाण शताब्दी मनाई गई थी, तब वहां जैन शासन की कितनी विभूतियां आदि एकत्रित हुई थीं। उस समय आचार्य तुलसी भी वहां विराजमान थे। जैन शासन के एक प्रतीक, एक ध्वज और एक प्रतीक का निर्णय होना भी अपने आप में एक महत्त्वपूर्ण बात थी।

जैन शासन के साधु-साध्वियों की साधना भी अच्छी रहे और परस्पर मैत्री भाव रहे। गृहस्थ जीवन में भी अच्छी साधना चलनी चाहिए। खानपान की शुद्धि रहनी चाहिए। जहां अशाकाहार हो, वहां यथासंभव भोजन करने से बचना चाहिए, ड्रिंकिंग भी न हो। उसके साथ नमस्कार महामंत्र की आराधना, त्याग-संयम का अभ्यास हो, रात्रि भोजन पूरा छूट सके तो अच्छा है, अन्यथा रात्रि दस बजे के बाद तो भोजन का परित्याग हो। ज्ञानाराधना का क्रम भी चले। इस प्रकार साधना आगे बढेगी, मैत्री भाव रहेगा तो 'जैनं जयति शासनं' की बात अपने आप चरितार्थ हो सकेगी।

प्रज्ञासागरजी महाराज से कल भी मिलना हुआ और आज पुनः मिलना हो गया। खूब अच्छी साधना चले, खूब अच्छा कार्य चले, मानवता की सेवा होती रहे।'

मुनि प्रज्ञासागरजी ने अपने वक्तव्य में कहा--'आचार्यश्री महाश्रमणजी अहिंसा यात्रा के साथ पूरे भारत में परिभ्रमण कर रहे हैं। २६० वर्षों में तेरापंथ धर्मसंघ पूरी दुनिया में छा गया। आज इस मंच से जैन शासन एकता की बात हो रही है। हम मत से एक हों या नहीं, मन से एक जरूर हों। मन एक होगा तो हम मंच पर

भी एक होंगे। मुझे जब आचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में होने वाले इस आयोजन की जानकारी मिली तो मैंने तुरन्त यहां आना स्वीकार कर लिया। हमारी साधना, उपासना पद्धति अलग-अलग हो सकती हैं, किन्तु हमारी जैन शासन की प्रभावना पद्धति एक हो।' कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

आचार्यप्रवर के त्रिदिवसीय इचलकरंजी प्रवास में शहर में सद्भावना का विशेष माहौल बना रहा। स्थानीय हजारों लोगों को पूज्यप्रवर के दर्शन का सौभाग्य मिला। तीनों दिन प्रवचन कार्यक्रम में स्थानीय जैन एवं जैनेतर जनता की विशाल उपस्थिति रही। उत्सुकतावश आने वाले लोग आचार्यप्रवर के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व से प्रभावित होकर मन में श्रद्धाभाव लिए हुए लौटे। इस अवसर पर इचलकरंजीवासियों के ज्ञाति व संबंधीजन भी बड़ी संख्या में विभिन्न क्षेत्रों से यहां पहुंचे और दर्शन-उपासना का लाभ लिया।

परिग्रह पर रहे पवित्रता का अंकुश

३ मार्च। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर त्रिदिवसीय प्रवास के पश्चात इचलकरंजी से जयसिंगपुर की ओर प्रस्थित हुए। इस अवसर पर मंगलभावों से अभिभूत सैंकड़ों श्रद्धालु उपस्थित थे। सबके श्रद्धाभावों को स्वीकार कर आचार्यप्रवर अपने गन्तव्य की ओर गतिमान हुए। पूज्यप्रवर करीब चार सौ मीटर अतिरिक्त दूरी तय करना स्वीकार कर एक अक्षम बालक को दर्शन देने उसके घर में पधारे। पूज्यप्रवर की अनुगृहवृष्टि उसके परिजनों को हर्षविभोर बनाए हुए थी। इस क्षेत्र में गन्ने से गुड़ निर्माण का कार्य प्रचुरतया होता है। इस कारण वातावरण में काला धुंआ गन्ने के सूक्ष्म कण छाए हुए थे। कहीं-कहीं गन्नों के जले हुए करीब आधा फुट लम्बे छिलके भी हवा में तैरते हुए या जमीन पर बरस रहे थे।

पूज्यप्रवर राजस्थानी गौ सेवा संघ की प्रार्थना पर मार्ग के परिपार्श्व में स्थित गौशाला में पधारे और मंगलपाठ सुनाया। विहार के दौरान कुछ श्रद्धालुओं को अपने-अपने व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के निकट पूज्यप्रवर के दर्शन और श्रीमुख से मंगलपाठ श्रवण का सौभाग्य प्राप्त हुआ। श्री संजय घोड़ावत के व्यावसायिक प्रतिष्ठान के समीप पूज्यप्रवर कुछ क्षण आसीन हुए। प्रसंगवश एक व्यक्ति ने पूज्यवर से निवेदन किया--'संजयजी सबको मान देते हैं।' इस पर आचार्यप्रवर ने एक प्रेरक वचन फरमाया--'जो दूसरों को मान देगा, उसे दुनिया मान देगी।' इस प्रकार अन्य प्रसंग में भी पूज्यप्रवर ने कुछ प्रेरणा प्रदान की।

मार्ग के आसपास ज्वार, केले, मिर्ची, गन्ना, मकई आदि की फसल अच्छी मात्रा में दिखाई दे रही थी। आचार्यप्रवर कुल करीब १६ कि.मी. का प्रलम्ब विहार परिसम्पन्न कर जयसिंगपुर के बाहरी भाग में स्थित श्री विनोद घोड़ावत के नवनिर्मित स्थान में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। अपने आराध्य का एक दिवसीय प्रवास अपने आंगन में पाकर घोड़ावत परिवार धन्यता की अनुभूति कर रहा था। परिवार के लोग आचार्यप्रवर के चरणस्पर्श और पावन प्रवास को अपने इस स्थान के उद्घाटन का मंगल अनुष्ठान मान रहे थे।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में परमपूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आदमी के भीतर कामना उत्पन्न होती है और उसका अतिरेक भी हो सकता है। इच्छा आकाश के समान अनन्त होती है। इच्छा दुःख का कारण बन सकती है। एक इच्छा पूरी होने पर दूसरी उत्पन्न हो सकती है। जैन श्रावकाचार का पांचवां व्रत है-इच्छा परिमाण और सांतवां व्रत है-भोगोपभोग परिमाण। सुविधाओं के उपलब्ध होने पर भी वैराग्य भावना से सुविधाओं का उपयोग नहीं करना विशेष बात होती है।

आदमी यह सोचे कि वह इच्छाओं का कितना त्याग कर सकता है, व्यक्तिगत जीवन में इच्छाओं का कितना संयम कर सकता है। पुण्य का योग हो और निमित्त भी अनुकूल हों तो अनुकूल संवेदन के रूप में पैसा तो प्राप्त हो सकता है, प्रतिष्ठा भी प्राप्त हो सकती है, पद भी मिल सकता है, किन्तु संपत्ति पास में होने के बाद भी आदमी व्यक्तिगत जीवन में संयम का अभ्यास रखे। खाद्य संयम हो, वस्तु संयम हो, दिखावा, आडम्बर, प्रदर्शन न हो। अभाव के कारण संयम हो जाए या करना पड़े, यह इतनी बड़ी बात नहीं, पास में कुछ होने पर

भी उसका त्याग करना बड़ी बात होती है।

आदमी को धन का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। दुरुपयोग न हो और संयम रहे तो परिग्रह होने पर भी आदमी पवित्र रह सकता है। गृहस्थ जीवन में परिग्रह के साथ नैतिकता, अच्छे सिद्धांत, अच्छे संकल्प और अच्छा संयम रहते हैं तो परिग्रह पर पवित्रता का अंकुश रह सकता है। पवित्रता विहीन परिग्रह अनर्थकारी, पापकर्मों का बंध कराने वाला और दुःखी बनाने वाला बन सकता है। इसलिए गृहस्थ जीवन में यह प्रयास रहना चाहिए कि परिग्रह पर पवित्रता का अंकुश रहे, त्याग-संयम का अंकुश रहे। गृहस्थ अपने जीवन में इच्छा परिमाण और भोगोपभोग परिमाण रखे तो यह जीवन भी अच्छा रह सकता है, आत्मा भी अच्छी रह सकती है और अगली गति अच्छी होने की संभावना बन सकती है।

आचार्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'आज विनोदजी घोड़ावत के यहां आना हुआ है। विनोदजी की धर्म-ध्यान में खूब रुचि बढती रहे, परिवार में भी खूब धार्मिकता, अच्छे संस्कार रहें।'

घोड़ावत परिवार के सदस्यों ने स्वागत गीत का संगान किया। श्री विनोद घोड़ावत, प्रज्ञा रुणवाल, श्री संजय घोड़ावत और श्री राजेन्द्र घोड़ावत ने अपनी आस्थासिक्त भावाभिव्यक्ति दी। सुहानी, देशना और तविष घोड़ावत ने अपने बालसुलभ भावों को प्रस्तुति दी।

जयसिंगपुर में उमड़ा जनसैलाब : महाश्रमणमय बना पूरा शहर

४ मार्च। चारों ओर से उमड़ता हुआ आस्था भावों से ओतप्रोत जन पारावार, जाति, भेद, सम्प्रदाय आदि को भुलाकर श्रद्धानत बने हुए हजारों मस्तक, दीदार की आतुरता लिए हुए हजारों आंखें, जयघोषों से गुंजायमान होते धरा-गगन आदि को देखकर अनायास ज्ञात हो रहा था कि आज जयसिंगपुर में किसी महापुरुष का मंगल प्रवेश हो रहा था या यों कहें कि पूरा जयसिंगपुर उस महापुरुष के स्वागत में उमड़ आया था। हर तरफ मानों जाति, सम्प्रदाय, वर्ग आदि के लेबल से मुक्त आह्लादित, प्रफुल्लित और उल्लसित इंसान ही इंसान नजर आ रहे थे। ऐसा होना स्वाभाविक भी था, क्योंकि मानवता के समुत्थान के लिए समर्पित, असाम्प्रदायिक व्यक्तित्व के धनी, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण आज जयसिंगपुर शहर में पावन प्रवेश जो कर रहे थे।

अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यप्रवर सूर्यादय के कुछ समय पश्चात् गतरात्रिक प्रवास स्थल से प्रस्थान कर जयसिंगपुर शहर में प्रवेश करने के लिए शहर की जनतारा कल्पवृक्ष विद्या मंदिर के समीप पधारे। आज के स्वागत जुलूस का प्रांरभ स्थल यही था। जनतारा स्कूल के निकट एक ओर हजारों की तादाद में जनता आचार्यप्रवर के स्वागत में पलक पांवड़े बिछाए खड़ी थी तो दूसरी ओर विद्यालय में सैंकड़ों छात्र-छात्राएं और शिक्षक आदि भी श्रीचरणों में अपने मंगलभाव अर्पित करने के लिए आतुर थे। आचार्यप्रवर विद्यालय परिसर में पधारे और कुछ समय के लिए मंचासीन हुए। विद्यार्थियों ने नमस्कार महामंत्र का लयबद्ध संगान करते हुए प्रार्थना प्रस्तुत की। पूज्यप्रवर ने समुपस्थित हजारों विद्यार्थियों, शिक्षकों आदि को अहिंसा यात्रा की संकल्पत्रयी स्वीकार करने का आह्वान किया तो उन्होंने करबद्ध होकर पूज्यप्रवर से प्रतीज्ञाएं स्वीकार कीं। पूज्यप्रवर ने उन्हें पावन संबोध भी प्रदान किया।

आचार्यप्रवर विद्यालय परिसर से बाहर पधारे तो भव्य स्वागत जुलूस जीवन्त हो उठा। लगभग बावन वर्षों बाद तेरांपथ धर्मसंघ के आचार्यप्रवर का पदार्पण स्थानीय तेरापंथ समाज के लोगों को हर्षाप्लावित बनाए हुए था, किन्तु अन्य जैन एवं जैनेतर समाज के लोगों के बीच उनकी पहचान करना कठिन कार्य था, क्योंकि आज अन्य जैन एवं जैनेतर समाज में भी वही उल्लास और उत्साह दृष्टिगोचर हो रहा था। मार्ग में मराठा समाज के लोगों ने आचार्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। पूज्यप्रवर ने वहां कुछ क्षण रुककर उन्हें मंगल आशीष प्रदान की। मराठा समाज के निवेदन पर आचार्यप्रवर नवनिर्मित मराठा भवन के निकट पधारे और संबंधित लोगों को वहीं से मंगलपाठ सुनाया। आक्काबाई नरसप्पा नान्द्रेकर जूनियर कॉलेज और नवजीवन हायर जूनियर कॉलेज

के सैंकड़ों विद्यार्थी पूज्यप्रवर के स्वागत में कतारबद्ध और करबद्ध खड़े थे। आचार्यप्रवर ने उन पर आशीषवृष्टि की।

जयसिंगपुर की नगरपालिका अध्यक्ष श्रीमती नीता माने आदि ने अपने शहर में शांतिदूत आचार्यप्रवर का सश्रद्धा स्वागत किया। पूज्यप्रवर ने उनको आशीर्वाद प्रदान किया। स्थान-स्थान पर खड़े गुजराती जैन स्थानकवासी संघ, जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी संघ, मूर्तिपूजक संघ और दिगम्बर जैन समाज के लोगों के निकट आचार्यप्रवर ने अपने चरण थामे तो उन्होंने पूज्यचरणों में अपनी प्रणति अर्पित की। पोस्ट ऑफिस के निकट माहेश्वरी समाज के लोगों ने आचार्यप्रवर को सविनय वन्दन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। बैंक ऑफ इण्डिया कॉर्नर पर लाल बावटा कामगार संगठन तथा ऑल्ड पुलिस स्टेशन के परिपार्श्व में हमाल गाड़ीवान गुमस्ता संगठन के सदस्यों ने आचार्यप्रवर के चरण कमलों में अपने मंगल भाव समर्पित किए। आचार्यप्रवर ने दोनों संगठनों के सदस्यों के समीप कुछ क्षण ठहरकर उन्हें प्रामाणिकता और नशामुक्ति की प्रेरणा प्रदान की।

महाराष्ट्र के आरोग्य मंत्री श्री राजेन्द्र पाटिल नगरपालिका कॉर्नर के निकट आचार्यप्रवर के स्वागत में अपनी धर्मपत्नी और अपने साथियों के साथ खड़े थे। पूज्यप्रवर वहां पधारे तो उन्होंने पूज्यपादाम्बुज में अपनी विनयांजलि अर्पित की। उन्हीं के समीप मुस्लिम समाज के लोग भी बड़ी संख्या में पूज्यप्रवर के स्वागत हेतु उपस्थित थे। उन्होंने आचार्यप्रवर का इस्तकबाल किया और अपनी व्यथा पूज्यप्रवर के समक्ष रखते हुए कहा--'आप हिन्दुस्तान के हालात के लिए दुआ करें कि जुल्म थोड़े कम हो जाएं।' आचार्यप्रवर ने फरमाया--'हमारी तो प्रेरणा है कि सब अच्छे रहें, सबमें सद्भावना रहे।' आचार्यप्रवर ने उन्हें उनकी पीड़ा के संदर्भ में पावन प्रेरणा प्रदान की। डॉक्टर्स ऐसोसिएशन (आई.एम.ए.एण्ड जे.एम.ए.) से संबंधित कई डॉक्टर्स भी पूज्यप्रवर की प्रतीक्षा में खड़े थे। आचार्यप्रवर का वहां पदार्पण हुआ ते उन लोगों ने भी करबद्ध होकर विनत भावों से पूज्यप्रवर का सादर स्वागत किया। आचार्यप्रवर ने उन्हें रोगी की मानसिक समाधि के विषय में प्रेरणा प्रदान की।

मारवाड़ी युवा मंच और रोटरी क्लब से जुड़े हुए लोग भी समूहबद्ध होकर बड़ी संख्या में पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। अनेक गणेशोत्सव मंडलों से संबंधित लोगों ने भी आचार्यप्रवर का सोत्साह स्वागत किया। विभिन्न समाजों, समूहों, संगठनों और संस्थाओं के लोगों के सिवाय भी यत्र-तत्र सैंकड़ों लोग आचार्यप्रवर के दर्शनार्थ खड़े थे। उन लोगों ने भी आचार्यप्रवर के चरणों में अपनी भावांजलि अर्पित कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। इस प्रकार करीब दो कि.मी की दूरी तय करने में पूज्यप्रवर को एक घंटे से भी ज्यादा समय लग गया। मानों पूरा शहर महाश्रमणमय बना हुआ था।

जनतारा स्कूल से प्रांरभ हुआ भव्य स्वागत जुलूस क्रांतिचौक, गांधीचौक, जेले बिल्डिंग, भारत बैंक होता हुआ तेरापंथ भवन पहुंचा। आज का कुल विहार करीब २.५ कि.मी. का रहा। आचार्यप्रवर तेरापंथ भवन में प्रवेश कर किसी श्रद्धालु के यहां पधारने के लिए पुनः भवन से बाहर पधारे। मार्ग में जैनेतर समाज की प्रार्थना पर पूज्यप्रवर का हनुमान मंदिर और विट्ठल मंदिर परिसर में भी पधारना हुआ। पूज्यप्रवर ने दोनों स्थानों पर मंगलपाठ उच्चरित किया। यथेष्ट स्थान में पधारकर और कुल एक कि.मी. की यात्रा सम्पन्न कर आचार्यप्रवर पुनः प्रवास स्थल में पधार गए।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम स्थल प्रवास स्थल से करीब ६०० मीटर दूर स्थित था। पूज्यप्रवर उस ओर पधारे तो मार्ग में दिगम्बर आम्नाय के आचार्य श्री पुष्पदंतसागरजी के शिष्य मुनि प्रसंगसागरजी आचार्यप्रवर से मिले। वे भी आज के कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए पहुंच रहे थे। वे आचार्यप्रवर के साथ-साथ कार्यक्रम स्थल की ओर बढ़े। आचार्यप्रवर गांववासियों की प्रार्थना पर ग्रामदेवता श्री सिद्धराज देवालय में पधारे और वहां मंगलपाठ उच्चरित किया। तदुपरांत आचार्यप्रवर सिद्धेश्वर ग्राउण्ड में निर्मित विशाल प्रवचन पंडाल में पधारे और मंच पर विराजित हुए। दिगम्बर मुनि प्रसंगसागरजी भी पूज्यप्रवर के समीप आसीन हुए। कार्यक्रम में आचार्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व मुख्यनियोजिकाजी और साध्वीप्रमुखाजी के उद्बोधन भी हुए। स्थानीय तेरापंथ युवक परिषद

के अध्यक्ष श्री अशोक रुणवाल और स्वागत समिति के अध्यक्ष श्री संजय घोड़ावत ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी। तेरापंथ समाज जयसिंगपुर द्वारा स्वागत गीत को प्रस्तुति दी गई। तेरापंथ युवक परिषद के सदस्यों ने गीत का संगान किया।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आदमी के जीवन का परम लक्ष्य यह होना चाहिए कि वह निर्वाण को प्राप्त करने की दिशा में गति करे। इस जीवन के ठीक बाद निर्वाण न मिल सके तो भी उसे निकट तो किया जा सकता है। निर्वाण ऐसी मंजिल है, जिसे प्राप्त करने के लिए अनेक जन्मों तक भी पुरुषार्थ करना पड़ सकता है।

जो धर्म की साधना करता है, वह निर्वाण को प्राप्त कर सकता है। आत्मशुद्धि की साधना अर्थात् ज्ञान, दर्शन और चारित्र की आराधना धर्म है। जो शुद्ध होता है, वह धर्म कर सकता है। जो ऋजु होता है, उसकी शुद्धि होती है। शुद्धि के लिए ऋजुता का होना आवश्यक है। किसी साधु से कोई गलती हो जाए, यदि उसे अपनी शुद्धि करनी है तो उसे अपनी गलती गुरु (प्रायश्चित्त प्रदाता) के सामने निश्छलतापूर्वक प्रस्तुत करनी चाहिए। डॉक्टर से बीमारी और गुरु से गलती नहीं छुपानी चाहिए। बीमारी अच्छी तरह बताई जाएगी तो डॉक्टर उसका उपचार कर सकेगा। इसी प्रकार गुरु को निश्छलभाव से अपनी गलती बताई जाएगी तो गुरु उस गलती का आध्यात्मिक इलाज कर सकेंगे।

पवित्रता बहुत बड़ी संपदा है। उसके लिए मन में ऋजुता/सरलता का होना आवश्यक है। जहां छल है, कपट है, वहां ऋजुता दूर हो जाती है। किसी को धोखा देना अच्छा नहीं होता। आचार, व्यवहार आदि में सरलता, शिष्टता रहती है तो आत्मा भी अच्छी रह सकती है और कार्य भी अच्छा हो सकता है। व्यक्ति की कथनी-करनी में समानता रहनी चाहिए।

सरलता और सच्चाई का गहरा संबंध है तथा झूठ और कपट का गहरा संबंध है। सरलता के आसन पर सच्चाई विराजमान होती है। संपत्ति मिल गई और सरलता व सच्चाई पास में नहीं है तो एक बड़ी कमी रह जाती है। बाहरी सम्पत्ति से महत्त्वपूर्ण है भीतरी सम्पत्ति। सरलता व सच्चाई भीतरी सम्पत्ति हैं। लोभ के वशीभूत होकर आदमी को सरलता व सच्चाई को छोड़ना नहीं चाहिए।'

जयसिंगपुर आगमन के संदर्भ में आचार्यप्रवर ने कहा--'हमारा जयसिंगपुर में आना हुआ है। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी का पदार्पण हुआ था। करीब बावन वर्षों के अन्तराल के बाद हमारा आना हुआ है। साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी उस समय एक साध्वी के रूप में गुरुदेव तुलसी के साथ पधारी थीं और आज लगभग ५२ वर्षों बाद साध्वीप्रमुखा के रूप में पधारी हैं। इस प्रकार गुरुकुलवास की यात्रा में दो बार दक्षिण भारत में आना विशेष बात है।'

साध्वीप्रमुखाजी ने इस प्रसंग में कहा--'मुझे स्मरण हो रहा है कि परमपूज्य गुरुदेव तुलसी लगभग बावन वर्षों पूर्व यहां मार्च माह में ही पधारे थे। गुरुदेव १६ मार्च १९६८ को यहां पधारे थे और यहां आठ दिनों का प्रवास किया था। जैसे आज प्रवचन में जनता का सैलाब उमड़ा है, वैसे ही उस समय भी जनता प्रवचन श्रवण के लिए बड़ी संख्या में आती थी। उस समय जाति, संप्रदाय, वर्ग आदि के भेद के बिना सभी लोगों ने प्रवचन का लाभ लिया। यही स्थिति आज हम देख रहे हैं कि विभिन्न वर्गों के लोग विभिन्न संप्रदायों में विश्वास करने वाले लोग आचार्यप्रवर को सुनने के लिए यहां उपस्थित हैं।

इतिहास स्वयं को दोहराता है। बावन वर्षों बाद तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्यप्रवर का जससिंगपुर में पादार्पण हुआ है। आचार्यप्रवर कितना-कितना श्रम करके यहां पधारे हैं। यद्यपि आज का विहार बहुत छोटा था, किन्तु आचार्यप्रवर प्रवास स्थल में पधारे, तब तक कितना विलम्ब हो गया। विहार छोटा हो या विहार न भी हो प्रवास स्थल में पहुंचते-पहुंचते प्रायः लगभग दस तो बज ही जाते हैं। पुरुषार्थ की लौ जहां इतनी प्रदीप्त रहती तो जनता को लाभ भी मिलता है। परमपूज्य आचार्यप्रवर के दो दिवसीय प्रवास में यहां की जनता भी सन्मार्ग

को अपनाए और अपना आध्यात्मिक विकास करे।'

कार्यक्रम में उपस्थित गणमान्यों के साथ जयसिंगपुर के हजारों जैन एवं जैनेतर लोगों ने पूज्यप्रवर की प्रेरणा से अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार किए।

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'आज आप (मुनि प्रसंगसागरजी) का समागमन हुआ। आचार्यश्री पुष्पदंतसागरजी महाराज चेन्नई में दो बार मिले थे। एक दिन तो दिन-रात हमारे आसपास ही विराजे थे, कार्यक्रम भी हुआ और दोपहर में जिज्ञासा-समाधान, चर्चा आदि के रूप में भी उपक्रम रहा था, अच्छा मिलना हुआ था। मुनि तरुणसागरजी से भी अनेक बार मिलना हुआ था। इचलकरंजी में प्रज्ञासागरजी महाराज से भी मिलना हुआ। आज मुनि प्रसंगसागरजी से मिलना हो गया। हमारा प्रसंग अध्यात्म के साथ जुड़ा रहे। धर्म की खूब प्रभावना होती रहे, अच्छी साधना चलती रहे।'

दिगम्बर आम्नाय के आचार्य पुष्पदंतसागरजी के शिष्य मुनि प्रसंगसागरजी ने कहा--'जिस नगर का, जिस भूमि का पुण्य जागृत होता है, वहां आचार्यश्री महाश्रमणजी जैसे महापुरुष का पदार्पण होता है, प्रवचन होता है। आज जयसिंगपुर में जैन समाज के ही नहीं, अपितु हिन्दू, मुस्लिम, मराठी आदि विभिन्न वर्गों, सम्प्रदायों, जातियों के लोग उपस्थित हैं। आचार्यश्री की सरलता और सहजता हम सबके लिए उदाहरण है। देश में ही नहीं, विदेशों में भी आपने जैन धर्म की प्रभावना की है। आपका वात्सल्य पाकर मैं अभिभूत हूं।'

महाराष्ट्र सरकार के आरोग्य मंत्री श्री राजेन्द्र पाटिल ने कहा--'मैं सम्पूर्ण जयसिंगपुर की ओर से आचार्यश्री महाश्रमणजी का स्वागत करता हूं, अभिनन्दन करता हूं। बावन वर्षों पूर्व आचार्यश्री तुलसीजी का भी यहां आगमन हुआ था और आज बावन वर्षों बाद आचार्यश्री महाश्रमणजी का यहां पदार्पण हुआ है। हम आचार्यश्री के चिरऋणी रहेंगे। आचार्यश्री की प्रेरणा से हम अपने जीवन में एक नया प्रकाश फैलाएं। आचार्यश्री अपनी अहिंसा यात्रा के द्वारा देश-विदेश में हजारों किलोमीटर भ्रमण कर सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति का जो संदेश दे रहे हैं, वह स्तुत्य ही नहीं, अनुकरणीय भी है। हम आचार्यश्री के तीनों संदेशों को अपने जीवन में अपनाएं। मैं नतमस्तक होकर आचार्यश्री के चरणों में अपना प्रणाम अर्पित करता हूं।'

पूर्व सांसद श्री राहुल शेट्टी ने कहा--'अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रणजी आज अपनी अंहिसा यात्रा के साथ जयसिंगपुर में पधारे हैं। अहिंसा यात्रा के तीनों संदेश--सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति आज सम्पूर्ण विश्व के लिए आवश्यक हैं। इन तीनों के प्रचार-प्रसार के पवित्र कार्य के लिए मैं आचार्यश्री के चरणों में प्रणाम करता हूं और यह संकल्प करता हूं कि मैं स्वयं इन तीनों का पालन करता रहूंगा और इनके प्रचार-प्रसार का हर संभव प्रयास करूंगा।'

जयसिंगपुर नगरपालिका अध्यक्ष श्रीमती नीता माने ने कहा--'आज आचार्यश्री महाश्रमणजी के आगमन से हमारी जयसिंगपुर नगरी पावन हो गई। तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्यश्री यहां बावन वर्षों बाद आए हैं। आचार्यश्री के पधारने से यहां की नई पीढी को नया पथदर्शन मिलेगा। आज के इस युग में अहिंसा यात्रा की अत्यन्त अवश्यकता है। हम आचार्यश्री के इस प्रवास के एक-एक पल का लाभ उठाकर अपने जीवन को धन्य बनाएं। प्रशस्त बनाएं।'

नांदणी मठ के भट्टारकश्री जिनसेन ने कहा--'जिनवाणी का मीठारस पिलाने के लिए तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्यश्री बावन वर्षों बाद हमारी इस धरा पर आए हैं। इसलिए आज यहां जनता उमड़ आई है। आज मानों जयसिंगपुर में दिवाली और दशहरे का त्यौहार है, क्योंकि आचार्यश्री महाश्रमणजी यहां पधारे हैं। मुझे आज सुबह जानकारी मिली कि आचार्यश्री जयसिंगपुर में पहुंच गए हैं और यहां के नागरिकों द्वारा आचार्यश्री का भव्य स्वागत किया गया। मैं अस्वस्थ होने के बावजूद आचार्यश्री का स्वागत करने चला आया। यहां आकर मुझे बहुत आनन्द की अनुभूति हुई।' कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

आचार्यप्रवर मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के उपरांत प्रवास स्थल की ओर पधारते हुए मार्ग में एक अक्षम

श्रद्धालु महिला को दर्शन देने उसके घर में पधारे। आचार्यप्रवर का यह अनुग्रह उस महिला और उसके परिजनों की प्रसन्नता को चरम पर स्थापित करने वाला सिद्ध हुआ।

पतन का मार्ग है अहंकार

५ मार्च। जयसिंगपुर प्रवास का दूसरा दिन। परमपूज्य आचार्यप्रवर सूर्योदय के कुछ समय पश्चात् प्रवास स्थल से प्रस्थान कर करीब सवा कि.मी. दूर स्थित श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ के स्थानक में पधारे और वहां कुछ समय विराजमान हुए। स्थानकवासी समाज द्वारा आचार्यप्रवर के स्वागत में प्रस्तुति दी गई। पूज्यप्रवर ने उपस्थित लोगों को पावन संबोध प्रदान किया। तदुपरांत पूज्यप्रवर पुनः प्रवास स्थल में पधार गए। मार्ग में कुछ लोगों को अपने-अपने घरों आदि के आसपास आचार्यप्रवर के दर्शन और श्रीमुख से मंगलपाठ श्रवण का सौभाग्य मिला।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आदमी के भीतर अनेक वृत्तियों में एक है अहंकार। कुछ प्राप्त होने पर व्यक्ति उसका घमंड कर सकता है। धन, रूप, तपस्या, ज्ञान, पद आदि के संदर्भ में अहंकार हो सकता है। अहंकार पतन का मार्ग है। अहंकार मुक्त रहने की साधना उत्थान की साधना है। अहंकार को मृदुता, विनम्रता से जीतना चाहिए।'

एंग्लो उर्दू स्कूल एंड जूनियर कॉलेज के शिक्षक नवाज हुसैन के साथ कई छात्र-छात्राएं भी कार्यक्रम में उपस्थित हुए। आचार्यप्रवर ने उन्हें पावन संबोध प्रदान करते हुए अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार करवाए।

साध्वीवर्याजी ने अपने उद्बोधन में आत्मा के प्रति सजग रहने की प्रेरणा दी। स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती पुष्पा बरड़िया, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष श्री संदीप बरड़िया, गुजराती स्थानकवासी संघ के अध्यक्ष श्री कनक शाह, श्री विजय रुणवाल, श्री गौतम बरड़िया और श्रीमती मंजू बरड़िया ने अपनी आस्थासिक्त भावाभिव्यक्ति दी। तेरापंथ महिला मंडल ने पूज्यप्रवर की अभ्यर्थना में गीत का संगान किया। स्थानकवासी समाज की महिलाओं ने गीत के द्वारा पूज्यप्रवर का अभिनन्दन किया। मूर्तिपूजक समाज महिला मंडल ने आचार्यप्रवर के स्वागत में गीत को प्रस्तुति दी। जयसिंगपुर की बेटियों ने गीत के माध्यम से पूज्यचरणों में अपने भावसुमन अर्पित किए। स्थानीय ज्ञानशाला परिवार ने अपनी प्रस्तुति के द्वारा अपने आराध्य का अभिनन्दन करते हुए श्रीचरणों में संकल्पों की भेंट समर्पित की।

परमाराध्य आचार्यप्रवर मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के पश्चात् प्रवास स्थल की ओर पधारने से पूर्व कुछ अतिरिक्त दूरी स्वीकार कर कई स्थानों पर पधारे। स्थानीय दिगम्बर समाज के निवेदन पर आचार्यप्रवर उससे संबंधित भवन परिसर में पधारे और संबंधित लोगों को मंगलपाठ सुनाया। पूज्यप्रवर स्थानीय मूर्तिपूजक समाज के अनुरोध को स्वीकार कर उससे संबद्ध उपाश्रय में पधारे। वहां पहले से अवस्थित मूर्तिपूजक तपागच्छ आम्नाय के आचार्यश्री अभयशेखरजी आदि ने आचार्यश्री महाश्रमणजी की अगवानी की। आचार्य द्वय उपाश्रय में कुछ क्षण आसीन हुए। दोनों विभूतियों के बीच संक्षिप्त वार्तालाप का क्रम रहा। तदुपरांत आचार्यप्रवर का गुजराती स्थानकवासी समाज की प्रार्थना पर उससे संबंधित स्थानक में पधारना हुआ। स्थानकवासी समाज द्वारा पूज्यप्रवर का आस्थासिक्त स्वागत किया गया। आचार्यप्रवर ने उपस्थित लोगों को पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए मंगलपाठ सुनाया। आचार्यप्रवर एक अक्षम श्रद्धालु को दर्शन देने उसके घर में पधारे। अपने आराध्य को अपने आंगन में पाकर वह श्रद्धालु और उसके परिजन अहोभाव की अनुभूति कर रहे थे। इस प्रकार चिलचिलाती धूप में अनेक स्थानों में पधारने के उपरांत पूज्यप्रवर पुनः प्रवास स्थल पधारे।

जयसिंगपुर के द्विदिवसीय प्रवास में पूरे शहर में अलौकिक वातावरण छाया रहा। हजारों जैन एवं जैनेतर लोग पूज्यप्रवर के दर्शन से लाभान्वित हुए। दोनों दिन मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में विशाल प्रवचन पंडाल

जनाकीर्ण रहा, जिसमें तेरापंथी श्रद्धालुओं से ज्यादा उपस्थिति अन्य जैन एवं जैनेतर लोगों की रही। जातीय, साम्प्रदायिक आदि भेद प्रायः अदृश्य ही रहे।

पूज्यचरणों का परस पा सरसा सांगली

६ मार्च। परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर प्रातः जयसिंगपुर से सांगली की ओर प्रस्थित हुए। मार्ग में कई श्रद्धालुओं को अपने-अपने घरों/व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के निकट अथवा किसी को अपने स्थान में पूज्यप्रवर के दर्शन और श्रीमुख से मंगलपाठ श्रवण का सौभाग्य मिला। इस प्रकार जयसिंगपुर के बाहरी भाग में पहुंचते-पहुंचते ही सवा आठ बज गए, लेकिन प्रकृति बादलों के माध्यम से महातपस्वी आचार्यप्रवर की सेवा में उपस्थित थी। मेघसमूह यदा-कदा सूर्य को आच्छादित कर विहार पथ को छायायुक्त बना रहे थे तो कभी सूर्य भी उन्हें चीरकर अपनी तेजस्विता बरसा रहा था। पूज्यप्रवर मार्ग के दांयीं ओर स्थित आचार्य तुलसी ब्लड बैंक एवं आचार्य महाप्रज्ञ आइ हॉस्पिटल में भी पधारे। श्री संजय घोड़ावत में अपने स्थान में पूज्यप्रवर का सविनय स्वागत करते हुए ब्लड बैंक और हॉस्पिटल से संबंधित अवगति प्रस्तुत की।

कृष्णा नदी पर बना पुल सांगली की ओर गतिमान पूज्यचरणों से पावन बना। पूज्यप्रवर ने विहार के दौरान कोल्हापुर जिले से सांगली जिले में प्रवेश किया। मार्ग के परिपार्श्व में निर्मित आचार्य आदिसागर अंकलीकर धाम से संबद्ध लोगों की प्रार्थना पर आचार्यप्रवर धाम परिसर में पधारे। मार्गस्थ हरियाली के कारण पूज्यप्रवर हॉल के भीतर नहीं पधारे पाए तो संबंधित लोगों को वहीं से मंगलपाठ सुनाया। आचार्यप्रवर सांगली में मार्ग के समीप स्थित प्रेमचंद घोड़ावत डायग्नोस्टिक सेंटर में भी पधारे। घोड़ावत परिवार ने आचार्यप्रवर का सश्रद्धा स्वागत करते हुए डायग्नोस्टिक सेन्टर के विषय में जानकारी निवेदित की।

करीब बावन वर्षों बाद तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्यप्रवर का सांगली में पदार्पण स्थानीय तेरापंथ समाज के उल्लास को चरम पर स्थापित किए हुए थ। अन्य जैन समाज एवं जैनेतर समाज में भी हर्षोल्लास का वातावरण दिखाई दे रहा था। यत्र-तत्र पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ खड़े जन समूह पूज्यप्रवर के चरणों में अपनी प्रणति कर मंगल आशीष ग्रहण कर रहे थे। प्रजापिता ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की कुछ ब्रह्माकुमारियों ने भी आचार्यप्रवर का सादर स्वागत किया।

आचार्यप्रवर लगभग १२ कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर सांगली में स्थित श्री राजेन्द्र प्रणव घोड़ावत परिवार के निवास स्थान में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। पूज्यप्रवर की अनुग्रहवृष्टि में अभिस्नात घोड़ावत परिवार धन्यता की अनुभूति कर रहा था।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'जो अपने आपका दमन, संयम कर लेता है, वह व्यक्ति यहां और आगे भी सुखी रह सकता है। अपने आप पर अनुशासन करने वाला आदमी सुखी हो सकता है। दूसरों पर अनुशासन भी किया जा सकता है, किन्तु उससे पहले स्वयं पर अनुशासन करना चाहिए। जो स्वयं पर अनुशासन नहीं करता, वह केवल दूसरों पर अनुशासन करना चाहे तो वह असफल भी हो सकता है, जो उच्छृंखलता के कारण स्वयं पर अनुशासन नहीं कर सकता, वह दूसरों पर अनुशासन कैसे कर सकता है। जो स्वयं अनुशासन में नहीं रहता, वह अच्छा अनुशास्ता नहीं बन सकता।

अनुशासन परिवार के लिए भी आवश्यक है और संगठन के लिए भी आवश्यक है। जिस परिवार में अनुशासन, आचार, मर्यादा, व्यवस्था नहीं हो, कोई किसी का कहना न माने, उस परिवार में भी कुछ कमी रह सकती है। जिस परिवार में एक मुखिया का महत्त्व हो, बड़ों का सम्मान हो, उसकी गरिमा रह सकती

है। देश में भी कुछ मुखिया हों और शेष सामान्य नागरिक हों तो सुव्यवस्था रह सकती है। जहां सभी मुखिया बनने का प्रयास करें और सबमें योग्यता न हो, वहां व्यवस्था गड़बड़ा सकती है।

अनुशासन और सहिष्णुता के बिना परिवार में अशांति हो सकती है। परिवार के मुखिया अनुशासन की दृष्टि से अपने-अपने परिवार का ध्यान रखें। पारिवारिक हित की दृष्टि से कहीं-कहीं मुखिया को भी झुकना पड़ सकता है। पारिवारिक जीवन समरसतापूर्ण और अनुशासनपूर्ण हो, इसके लिए कुछ बलिदान, कुछ त्याग, परोटने की कला आदि गुण अपेक्षित होते हैं।

कार्यक्रम में बड़ी संख्या में उपस्थित सांगलीवासियों ने अहिंसा यात्रा के संकल्प ग्रहण किए। आचार्यप्रवर ने श्री राजेन्द्र घोड़ावत परिवार के निवास स्थान में आगमन के संदर्भ में कहा--'आज प्रेमचंदजी राजेन्द्रजी घोड़ावत परिवार के यहां आना हुआ है। परिवार में धर्म का अच्छा प्रभाव रहे।'

जैन विश्व भारती की ओर से भिक्षु वाङ्मय के अन्तर्गत आचार्य भिक्षु आख्यान साहित्य का तृतीय और चतुर्थ ग्रन्थ पूज्यप्रवर के समक्ष लोकार्पित किया गया।

पूज्यप्रवर ने इस संदर्भ में कहा--'हमारे धर्मसंघ के पहले गुरुदेव आचार्यश्री भिक्षु स्वामी थे। उनके साहित्य की दो पुस्तकें लोकार्पित हुई हैं। उनका साहित्य राजस्थानी भाषा में है। वह हिन्दी अनुवाद के साथ प्रकाशित हुआ है। परम पूज्य भिक्षु स्वामी का साहित्य ज्ञानात्मक दृष्टि से बहुत सम्माननीय है।'

सांगली तेरापंथ समाज के द्वारा पूज्यप्रवर की अभ्यर्थना में गीत का संगान किया गया। तेरापंथी सभा-सांगली के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र घोड़ावत, श्री प्रणव घोड़ावत और श्री प्रतीक बरडिया ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी श्रद्धासिक्त भावाभिव्यक्ति दी।

नवीन घोषित चतुर्मास व समणी केन्द्र

१. मुनिश्री पृथ्वीराजजी (श्रीडूंगरगढ)	:	बोरावड़
२. मुनिश्री संजयकुमारजी, मुनि प्रसन्नकुमारजी	:	दिवेर
३. मुनि जम्बूकुमारजी (सरदारशहर)	:	आदर्शनगर, सवाईमाधोपुर
४. साध्वी रत्नश्रीजी (श्रीडूंगरगढ)	:	रोहिणी, दिल्ली
५. साध्वी जयप्रभाजी	:	शालीमारबाग, दिल्ली
६. साध्वी सुमनश्रीजी	:	ग्रीनपार्क, दिल्ली
७. समणी ज्योतिप्रज्ञाजी (समणी केन्द्र)	:	काठमांडो

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001

मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapti@terapanthinfo.com

ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाईल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-9 नवीन शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला